









मी-वैर्म्य नभः

म्भिम्त-मुम्-मद्भग-रुगवसुम्-परभुगगउ-भुलाभुग्य-भवस्र-पी०भा म्-िक मु-िक भके ए-पी०भा एगमुन-मी-मद्भग्राट-भ्राभि-मीभ०-भंभूपनभा

॥मृब्य-उउीया॥

कैमाप-मुक्त-३3ीया

या क्विभा कुरुमार् ल वैमापि भाभि वै उिषिः। उउीया भारवया लेक गीवाल्पेरिकनिन्दार॥७७॥ यउं किंगिमा मीयउँ मानं भ्रतं वा यमि वा वका उउर भरूभव्यं भूग्मा वै उनेयभव्या भूउ ॥३०॥ —रुविधुभन्पप्राण प्षमे रुक्तप्राण एकविम गुण्य

य षा गुग्भि वक्वाभि उडीयां भवका भराभा। वभूं ए इं इं ए पुं भन्नं रुवित ग्राव्यभाषा

वैमापि मुक्तपब् उ उडीया चैरुपेधिडा। मन्यं प्रलभापेडि भवम् मुत्रुम् प्रााशा

—भक्कुभन्यपुराल पक्कुभन्त मृण्य

वैद्य-एय्-माभु-परिपालन-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**



मुक्रम्गुल्यिं सानं रुवेस् सर्वं युगासिधा वैमापि मुक्तभव उ उडीयायां ए राभिनि॥

भाक्ष यु उर्वे विमा ठक्टा उलम्परण्लैः पिवै। माम्रं तुउं ठवेडा उन गङ्गवं नाउ भंमवः॥

—भुः न् भक्र प्रात्य मध्म प्रामापत्र

वैर्य-एग्न-माभु-पिरिपालन-मरा

© 9884655618 **4** © 8072613857 **4**